❶ ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.10, रोहिणी, दिल्ली

वर्ष 48, अंक 39 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 जुलाई, 2025 से रविवार 27 जुलाई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष-ज्ञान ज्योति महोत्सव का समापन समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 की

तैयारियों, रूपरेखा और विभिन्न संगठनों की भूमिका निर्धारण हेतु विशाल सार्वजनिक बैठक

रविवार 27 जुलाई, 2025 ★ सायं 4 बजे ★ आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली

इस विशेष बैठक में सारे देश की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रमुख अधिकारी सम्मिलित होंगे, साथ ही अति विशिष्ट महानुभावों का मार्गदर्शन हमें प्राप्त होगा। अतः समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, दिल्ली एवं दिल्ली के आस-पास के प्रमुख संगठनों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से अनुरोध है कि बैठक में अवश्य सम्मिलित होवें और इस ऐतिहासिक महासम्मेलन के विशाल आयोजनों में अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार आर्य	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	सुरेन्द्र रैली	सतीश चड्डा	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	राजेन्द्र वर्मा
अध्यक्ष	प्रधान	सदस्य	प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	प्रधान
ज्ञान ज्योति महोत्सव आ.स.	सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा कोर कमेटी		आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आ.स. ग्रेटर कैलाश-1

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों-ज्ञान ज्योति महोत्सव के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा

शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू में दो दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

विश्व में शान्ति और स्थिरता का आधार बनेंगे-महर्षि दयानन्द के विचार- मनोज सिन्हा, उपराज्यपाल ज.क.

वेद ही है, सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के आधार - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने से होगा मानव कल्याण - प्रकाश आर्य

आर्य समाज का अर्थ है-दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन - विनय आर्य

महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने हेतु मिलकर कार्य करें आर्यजन- नरेन्द्र त्रेहन, प्रधान, ज.क. सभा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200 वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

विश्वविद्यालय जम्मू के बाबा जित्तो ऑडिटोरियम में 19, 20 जुलाई 2025 तक 2 दिवसीय आर्य महासम्मेलन अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास, आर्य महिला सम्मेलन, युवा निर्माण एवं आर्य समाज सम्मेलन, शिक्षा एवं संस्कार सम्मेलन, आर्य समाज की वैचारिक पृष्ठभूमि एवं मान्यताएं, वैदिक सनातन धर्म वर्तमान स्थिति एवं चुनौती, वर्तमान स्थिति और अग्रिम चुनौती सहित कार्यकर्ता सम्मान समारोह के भव्य और प्रेरक कार्यक्रम संपन्न हुए। इस अवसर पर जम्मू कश्मीर के माननीय उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा, गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत, स्वामी सदानंद, स्वामी देवव्रत, आचार्य सोमदेव, आचार्या नंदिता शास्त्री, श्री प्रकाश आर्य, श्री विनय आर्य, डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार, माता सत्यप्रिया यति आदि अनेक महानुभाव उपस्थित रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान श्री नरेंद्र त्रेहन, श्री कुलदीप गुप्ता, आर्य समाज रेहाड़ी, श्री राजीव सेठी, श्री अरुण चौधरी और पूरे जम्मू कश्मीर की आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य भारी संख्या में उपस्थित रहे और पूरी एकजुटता से कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- शेष पृष्ठ 4-5 एवं 7 पर

देववाणी-संस्कृत

पुकार सुनने पर वह रक्षा करता है

वेद-स्वाध्याय

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वं आ वृणीमहे।।
-ऋ० 9।61।4; साम० ऊ 2।1।5
ऋषिः- **आङ्गिरसोऽमहीयुः**।। देवता-**सोमः**।। छन्दः- **गायत्री**।।

शब्दार्थ - **पवित्रं अभि उन्दतः** = हमारे पवित्र हुए अन्त:करण को भक्तिरस से आर्द्र करते हुए **पवमानस्य** ते = तुझ परम पावन के **सखित्वम्** = सख्य का, मित्रभाव का वयम् = हम **आवृणीमहे** = वरण करते हैं।

विनय - हे त्रिभुवन-पावन! तुम अपने स्पर्श से इस सब जगत् को पवित्रता दे रहे हो। यह सच है कि तुम्हारे बिना यह संसार बिल्कुल मलिन है। यह संसार तो स्वभावत: सदा मलिन ही होता रहता है, विकृत होता रहता है, गन्दगियाँ पैदा करता रहता है, परन्तु तुम्हारी ही नाना प्रकार की पवित्र करनेवाली धाराएँ नाना प्रकार से इस संसार के सब क्षेत्रों से इन मलिनताओं को निरन्तर दूर करती रहती हैं। हे पवमान! हे सब जगत् को अपने अनवरत प्रवाह से पवित्र करनेवाले! जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप की इस पवित्रता को जानते हैं, वे अपने-आपको भी (अपने हृदय को भी) पवित्र करने में लग जाते हैं, अपने अन्त:करण से काम, क्रोध आदि विकारों को निकालकर इसे बड़े यत्न से निर्मल बनाते हैं। जब यह पवित्र हो जाता है तो इस पवित्र अन्त:कारण में तुम्हारी सात्त्विक धाराएँ जो आनन्द-रस पहुँचाती हैं, हृदय को सदा सरस बनाये रखती हैं, उसका वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता। पवित्रान्त:करण भक्त लोग ही उसका अनुभव करते हैं। जिनके हृदयों में द्वेष, क्रोध, जड़ता आदि का कूड़ा भरा हुआ है उनके शुष्क हृदय, या जिन्होंने प्रेम-शक्ति का दुरुपयोग कर विषैले रसों से हृदय को गन्दा कर रखा है उनके मलिन हृदय, इस पवित्र आनन्द रस का आह्लाद क्या जानें? जब मनोविकारों का यह सूखा या गीला मैल निकल जाता है, तभी मनुष्य के हृदय में तुम्हारे पवित्र-रस का स्पन्दन होना प्रारम्भ होता है और उसमें फिर दिनों-दिन सात्त्विक रस भरता जाता है। भक्तिभाव के बढ़ने से जब भक्तों के हृदय-मानस आनन्द की हिलोरें लेने लगते हैं, तो वे देखने योग्य होते हैं। हे सोम! तब उनके पवित्र हृदय का तुम 'पवमान' के साथ सम्बन्ध जुड गया होता है। इस सम्बन्ध, इस सखित्व, इस एकता के कारण ही उनका हृदय सदा तुम्हारे भक्ति-रस के चुआनेवाला झरना बन जाता है। हे प्रभो! यह सम्बन्ध, यही अपना सखित्व हमें प्रदान करो। हे सोम! हम तुझसे इसी सखित्व की भिक्षा माँगते हैं। हे जगत् को पवित्र करनेवाले! जिस सख्य के हो जाने से तुम्हारी पवित्रकारक धारा मनुष्य को सदा भक्ति-रस से रसमय बनाये रखती है, उसी सखित्व की भिक्षा माँगते हैं। हे जगत् को पवित्र करने वाले! जिस सख्य के हो जाने से तुम्हारी पवित्र कारक धारा मनुष्य के हृदय को सदा भक्ति-रस से रसमय बनाये रखती है, उसी सखित्व की भिक्षा हमें प्रदान करो। हम अपने हृदय को पवित्र करते हुए तुमसे यही सखित्व, यही मैत्रीभाव, यही प्रेम-सम्बन्ध प्राप्त करना चाहते हैं, वरना चाहते हैं। यह वर हमें प्रदान करो।

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली - 2025

150 वर्षों की सुदीर्घ सफल यात्रा के अवलोकन और उज्जवल भविष्य के संकल्प का अवसर

किसी भी वृक्ष के सारे बीजों में अंकुरण नहीं होता, सारे अंकुर पौधे और वृक्ष नहीं बनते, सारे पौधों, वृक्षों पर फल और फूल नहीं आते। 19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जिस समय मुंबई की धरा पर 1875 में आर्य समाज रूपी संगठन का बीजारोपण किया था, उस समय या उससे आगे-पीछे की काल अवधि में कई संगठनों की स्थापना हुई, किन्तु वे आज कहीं आस पास नजर नहीं आते किन्तु आर्य समाज 150 वर्षों की लंबी यात्रा के साथ ही एक वटवृक्ष के रूप में विशाल और विस्तृत आकार में संपूर्ण विश्व को वेद ज्ञान के आधार पर निरंतर उन्नति, प्रगति और सफलता का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। आज इस वृक्ष की अनेक शाखाएं जो संपूर्ण विश्व में मानव सेवा के केंद्रों के रूप में शिक्षा, सेवा, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति के नित्य नए आयाम स्थापित कर रही है।

इसके पीछे महर्षि दयानंद सरस्वती जी की सत्य के प्रति धारणा, संसार के परोकार की भावना और महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर असंख्य महापुरुषों, बलिदानियों का देश, धर्म, संस्कृति, संस्कारों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करना, समाज में फैली हुई कुरीतियां और विकृतियों, अंधविश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए तन मन धन से समर्पित होना तथा वैदिक वांगमय को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प ही है। जिस समय महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज के संगठन को 10 नियमों के रूप में स्वर्णिम सूत्र प्रदान किये तब इन कल्याणकारी आर्य समाज के मूल सिद्धांतों को लोग स्वीकार करने की बात तो दूर अतिशयोक्ति के रूप में देखते थे। महर्षि दयानंद ने आर्य समाज के तीसरे नियम और उसके पहले चरण "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" उद्घोषणा की, तब अन्य लोगों की बात तो छोड़िए जो लोग स्वयं वेद को परमेश्वर द्वारा प्रदत्त सनातन ज्ञान मानते थे उनके दल में भी काना फुंसी होने लगी और वह महर्षि की इस महान उद्घोषणा को अतिशयोक्ति पूर्ण समझने लगे, कालांतर में वेद ज्ञान और महर्षि के प्रति अनन्य निष्ठा वाले श्री योगी अरविंद से उनके किसी जिज्ञासु शिष्य ने पूछा, स्वामी दयानंद ने वेद के संबंध में जो यह कहा है "वेद सब सत्य विधाओं का पुस्तक है" घोषणा की है, क्या यह उपयुक्त है, तब योगी अरविंद ने उस जिज्ञासु से कहा कि स्वामी दयानंद ने वेद के संबंध में जो कहा है वह अतिशयोक्ति ही नहीं अपितु वेद ज्ञान के प्रति कुछ कम करके ही कहा है, वास्तव में वेद के संबंध में जो ऋषि दयानंद ने कहा है वह कथन उनका नहीं अपितु महाराज मनु का है, जो मनु महाराज ने वेद के संबंध में कहा है, "सर्व वेदात प्रसिद्धयति" श्री अरविन्द ने महाराज मनु का उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज के मूल सिद्धांतों, नियमों में ईश्वर की अमृतवाणी वेद के सत्य ज्ञान को आधार बनाकर ही एक आदर्श व्यवस्था समाज को प्रदान की है।

आर्य समाज की स्थापना, आर्य समाज के नियम, आर्य समाज की मान्यताएं, आर्य समाज के सिद्धांत, आर्य समाज की परंपराएं, आर्य समाज द्वारा समाज सुधार के कार्य, आर्य समाज के सेवा कार्य, आर्य समाज की शिक्षाएं, आर्य समाज की विचारधारा अथवा आर्य समाज की संपूर्ण गतिविधियां वेद और सत्य पर ही आधारित हैं। तभी तो आज आर्य समाज अपने संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष, स्थापना के 150 वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के भव्य समापन समारोह को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के रूप में 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक विश्व स्तर पर मना रहा है। यही अवसर है जब सभी आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, उपदेशों, संदेशों, आदर्शों को शिरोधार्य करके आगामी वर्षों के लिए सेवा,साधना के पथ पर आगे बढ़ने के लिए अपने मन को संकल्पित करेंगे। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्थान , आर्य परिवार की समस्त युवा पीढ़ी को आर्य समाज के सिद्वान्त, मान्यता और परम्पराओं से अवगत कराने का यह सुनहरा अवसर है।

सत्य के प्रति आग्रही महर्षि दयानंद जी के जीवन से जुड़ी ऐसी अनेक प्रेरक घटनाएं हैं जब उन्होंने किसी भी स्थिति परिस्थिति में असत्य को मानने से न केवल इनकार किया बल्कि असत्य के प्रति जबरदस्त रोष भी व्यक्त किया, एक बार जब महाराज वेंकट गिरी ने महर्षि दयानंद जी से मूर्ति पूजा का विरोध न करने तथा अपने कार्यक्रम में उसको अंतिम स्थान पर रखने का निवेदन करते हुए समूचे वेद भाष्य का आर्थिक भार उठाने की बात कही तब महर्षि ने अत्यंत आवेश में आकर उनसे कहा था, "क्या आपने मुझे दुकानदार समझ रखा है जो धन के प्रलोभन में अपने कर्तव्य से पीछे हट जाऊं" जिस समय स्वामी जी आर्य समाज की स्थापना की योजना पर उपस्थित महानुभावों से विचार विमर्श कर रहे थे तब भी किसी महाशय ने उनसे कुछ ऐसा ही आग्रह किया था, तब महर्षि दयानंद ने कहा था कि " मैं आर्य समाज की नीव असत्य पर नहीं रख सकता" लाहौर आर्य समाज के अधिवेशन की घटना है, जब सभासदों ने उप नियमों के निर्धारण में उनकी सम्मति लेनी चाही तब महर्षि ने कहा था कि वे उनके अंतरंग सभा के सभासद नही हैं अत: अपने को सम्मति देने का अधिकारी नहीं मानते, परंतु सभासदों का अत्यंत आग्रह था कि आर्य समाज के संगठन एवं संचालन विषयक संविधान के निर्धारण में महर्षि दयानंद की सम्मति अवश्य ली जानी चाहिए अत: उन्हें तुरंत आर्य समाज लाहौर के अंतरंग सभा का प्रतिष्ठित सदस्य मनोनीत किया गया, उसके पश्चात ही उन्होंने अपनी सम्मति से सभासदों को अवगत कराया था। वेद और सत्य को लेकर महर्षि कि यह उद्घोषणा कि चाहे मेरी उंगलियों को मोमबत्ती की तरह आग से जला दिया जाए फिर भी मेरे मुख से वेद की श्रुति ही निकलेगी, क्या यह कोई साधारण बात थी?

आर्य समाज की स्थापना, आर्य समाज के नियम, आर्य समाज की मान्यताएं, आर्य समाज के सिद्धांत, आर्य समाज की परंपराएं, आर्य समाज द्वारा समाज सुधार के कार्य, आर्य समाज के सेवा कार्य, आर्य समाज की शिक्षाएं, आर्य समाज की विचारधारा अथवा आर्य समाज की संपूर्ण गतिविधियां वेद और सत्य पर ही आधारित हैं। तभी तो आज आर्य समाज अपने संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष, स्थापना के 150 वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के भव्य समापन समारोह को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के रूप में 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक विश्व स्तर पर मना रहा है। यही अवसर है जब सभी आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, उपदेशों, संदेशों, आदर्शों को शिरोधार्य करके आगामी वर्षों के लिए सेवा,साधना के पथ पर आगे बढ़ने के लिए अपने मन को संकल्पित करेंगे। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्थान , आर्य परिवार की समस्त युवा

- शेष पृष्ठ 7 पर

युवा निर्माण एवं आर्यसमाज

– स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती
अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

कुमार, किशोर और युवावास्था – ये तीन अवस्थाएं है। बालक 8 वर्ष तक कुमार, 14–15 वर्ष तक किशोर और 16–25 वर्ष तक युवा कहलाता है। संस्कृत की यू मिश्रणा मिश्रणयो: धातु से युवा शब्द बना है जो निर्माण और विध्वंस (तोड़फोड़) दोनों करने सामर्थ्य रखता है उसे युवा कहते हैं। युवा पृथ्वी के प्रथम नागरिक हैं।

जवानी नाम है बलिदान का
विषदान करने का।
चुनौती संकटों को दे दु:खों का
मान करने का।

जीवन का यह बसन्त काल है ऐसा अवसर एक बार ही आता है।

जो जाकर न आये वह जवानी देखी।
जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा।

निर्माण से अभिप्राय शारीरिक विकास, बौद्धिक उन्नति और अजीविका (योगक्षेम) की प्राप्ति से है।

युवा निर्माण से पहले वर्तमान समय के युवा वर्ग की परिस्थितियों का अवलोकन करना उचित होगा।

1. दुर्व्यसन – जी व्यक्ति को पतन की ओर ले जाये उसे दुर्व्यसन कहते हैं जैसे मद्यपान, धूम्रपान, मादक पादार्थो का सेवन, जुआ, सट्टा, अधिक मोबाइल देखना आदि। वर्तमान समय में बच्चे और युवक इनके कुचक्र से फंसकर तन–मन धन सर्वस्व लुटा रहे हैं। किसी राष्ट्र की उन्नति या अवनति वहाँ के युवा वर्ग पर ही अवलम्बित है। आज का युवा इण्टरनेट के मकड़जाल में फंसकर अपनी संस्कृति, मर्यादा और मान–सम्मान को भूलता ही जा रहा है। उसे आवश्यकता है सही दिशा निर्देश और सन्मार्ग पर चलाने की। आर्य समाज से बढ़कर चरित्र, संस्कृति एवं राष्ट्रवाद की भावना भरने वाला कोई दूसरा ही नहीं।

2. दिशा हीनता– उचित मार्ग दर्शन के अभाव में युवा वर्ग कर्त्तव्य विमूढ़ हो गया है। उसे कोई उचित दिशा, सन्मार्ग, कर्त्तव्य पालन, और चरित्र की शिक्षा देने वाला मार्ग दर्शक चाहिये।

ऋग्वेद में ऐसे कुमार की स्थिति का वर्णन करते हुये कहा है।

यं कुमार नवं रथमचक्रं मनसाकृणो:
एकेषं विश्वत: प्राञ्चमपश्यन्नधि
नितसि।।

हे कुमार तुम्हारी जीवन गाड़ी के अभी चक्र भी नहीं लगे हैं। इसमें भोगविलास का एक ही कूबर है। जिसे तू मनमाने ढंग से बिना देखे चारों और घुमाये फिर रहा है। सुन–

यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि।
तं सामानु प्रावर्तत समितो थाव्याहितम्।।
ऋ 101135 (3–4)

हे कुमार! यदि बुद्धिमान् वृद्ध लोगों के मार्ग दर्शन में इस जीवन रथ को चलायेगा तो सुख और शान्ति की प्राप्ति होगी। जैसे बिना भार वाली नौका तूफान आने पर उलट जाती है वैसे ही अपनी जीवन नौका में कुछ ज्ञानी जनों को बिठा ले जो तुम्हें जीवन में आने वाली विपत्तियों से सुरक्षित रखेंगे।

जिस युवक की कोई दिशा अर्थात् लक्ष्य नहीं होता उसकी दुर्दशा होती है। आर्य समाज ऐसे युवकों का मार्गदर्शन कर सकता है। क्योंकि उसके पास सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहारभानु, संस्कार विधि जैसे अमूल्य ग्रन्थ हैं जिनमें युवा, वृद्ध, स्त्री–पुरुष, गुरु शिष्य, माता–पिता सभी के सम्बन्ध एवं कर्त्तव्य कर्मो का विधान किया है। इस कार्य के लिये आर्य समाज के बुद्धि जीवी वर्ग को आगे आना होगा।

युवा निर्माण से अभिप्राय उसके जीवन की गाड़ी में उनका शारीरिक विकास, बौद्विक उन्नति दो चक्रों का लगाना और सही मार्ग दर्शन करना है। जहां तक शारीरिक विकास का प्रश्न है प्रत्येक आर्य समाज में व्यायामशाला और आर्यवीर दल की शाखा लगनी चाहिये। शारीरिक स्वास्थ्य एवं लड़कियों के लिये योग, आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। आर्यवीर दल के प्रशिक्षण से इस समस्या का समाधान होना सम्भव है।

युवकों को बैद्धिक और सैद्धान्तिक ज्ञान के लिये धार्मिक परीक्षा, बौद्धिक सत्र एवं लघु पुस्तिका (टैक्स) छपवाकर विद्यालयों में वितरण अथवा लागत मूल्य पर देनी चाहिये। निर्धन विद्यार्थियों के लिये नि:शुल्क, ट्यूशन, छात्रवृत्ति, पुस्तक, वर्दी आदि का वितरण करते हुये आर्य समाज का साहित्य भी दिया जा सकता है।

युवा निर्माण तभी सम्भव है जब वे आर्य समाजों में आयें इसके लिये निम्न उपाय करने होंगे।

– शेष अगले अंक में

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

जब स्वदेश और स्वराज्य जैसे शब्द हमारी शब्दावली में नहीं थे!

गतांक से आगे –

पढ़े–लिखे भारतीयों के मन में यह व्याप्त हो रहा था कि हम तो अनपढ़ थे, आदिमानव का जीवन जीते थे, अंग्रेजों ने आकर हमारा उद्धार कर दिया।

जाति प्रजातियों में भारतीय समाज पूरी तरह बंट चुका था। हम सब राम और कृष्ण की ही संतान हैं ये बातें पूरी तरह भूल चुके थे।

हम अपने प्राचीन गौरव और शक्ति को भुला चुके थे, अपनी विशाल सीमाओं को भुला चुके थे। छोटे–छोटे राज्य ही हमारे लिए देश हो गए थे—पटियाला, नाभा, रामपुर, उदयपुर, जोधपुर, झांसी, ग्वालियर। यही हमारे देश हो चुके थे एक भारत की कल्पना से हम कोसों दूर जा चुके थे।

साहित्य के नाम पर भक्ति साहित्य, श्रृंगार रस या बादशाह और राजाओं की स्तुति का साहित्य पुरस्कारों के लालच में रचा जा रहा था। धार्मिकता के नाम पर आडंबर ही पहचान बनकर रह गए थे। स्त्रियों की दशा, ऊंच–नीच और छुआछूत के कारण समाज कमजोर हो चुका था। हिन्दुओं का बड़ी तेजी से धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। शास्त्रों में शुद्धि का विधान होते हुए भी लोभी, लालची व मुस्लिम शासकों से अपनी जान बचाने के लिए ब्राह्मण वर्ग, शुद्धि को शास्त्र विरुद्ध कहकर विरोध करते थे, जिस कारण धर्मान्तरण बढ़ रहा था, शुद्धि का मार्ग था ही नहीं, इस कारण घर वापसी के द्वार बंद थे। बिना अर्थ के नामों को रखने की परम्परा चरम पर थी।

सब भारतीय अब पूरी तरह से अंग्रेजी सत्ता को अपनी वास्तविक सरकार के रूप में स्वीकार कर चुके थे। किसी तरह का कोई वैर–विरोध अंग्रेजों से नहीं रहा था। कर देने के विषय में अंग्रेजों के साथ वाद–विवाद होते रहते थे। अंग्रेज लूटने के बहाने ढूंढते रहते थे, किसानों की जमीनों पर कब्जा करने के तौर–तरीके देखते रहते थे, कभी–कभी किसी–किसी स्थान पर इन्हीं को लेकर विवाद होता रहता था। सारे देश के राजे–रजवाड़े उनकी शान में कसीदे पढ़ते थे और बड़े–बड़े उपहार उनको भेंट करते थे। ये राजे अंग्रेजी महारानी के दर्शन के अभिलाषी बनकर लन्दन जाते थे और अमूल्य उपहार भेंट किया करते थे। अंग्रेजी सत्ता येन–केन–प्रकारेण उनके राज्यों की वास्तविक सत्ता छीनने के तरीके देखती रहती और ये रजवाड़े अपनी सत्ता को अंग्रेजों के सहयोग से अक्षुण्ण रखने के तौर–तरीके देखते रहते। कुल मिलाकर अंग्रेजी सत्ता को कोई चुनौती भारतीयों से नहीं थी और किसी के मन में भी भारत पर पुन: अपना अधिकार करने की बात नहीं थी। कम शब्दों में कहें तो अंग्रेज भारत के निर्बाध, निरंकुश शासक बन चुके थे और हम उनके दमन की चक्की में पिसते रहने वाली प्रजा, जिसके विरोध में कभी किसी राजा ने आवाज नहीं उठाई, इसलिए यहां की प्रजा ये दमन शान्त रहकर सहने को मजबूर थी।

भारत की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि थी और कृषि का आधार गो। दोनों विदेशी शासक वर्गों की विचारधारा में गो का क्या स्थान था, यह किसी से छिपा नहीं है।

स्वदेश—ये शब्द हमारी शब्दावली में ही नहीं था।

स्वराज्य—ये शब्द हमारी सोच में ही नहीं था। इसको मांगने की बात तो बहुत दूर की है।

जातिवाद का विष ही था जिसने हमारे समाजवाद की जड़ों को खोखला कर दिया था। छूआ–छूत ने हमें गुलाम बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

युद्ध में अलग–अलग भोजन पकाने की रूढीवादी बाध्यता ने हमारी सेना की एकता को प्रभावित किया।

हमारी भाषा हमसे पूरी तरह से छुड़वा ली गई थी। साहित्य लेखन केवल श्रृंगार या राज्य स्तुति तक सीमित रह गया था।

शिक्षा पद्धतियों/शिक्षणालयों को समाप्त करके हमें पूरी तरह से गुलाम बना लेने की तैयारी थी।

हमारे मूल धर्मग्रन्थों में मिलावट के षड़यन्त्र करके हमें धार्मिक रूप से अनपढ़, गंवार और सबसे पिछड़ा बना देने की तैयारी की जा चुकी थी।

धर्म को केवल कर्मकाण्ड और अंधविश्वासों के हवाले होकर केवल एक वर्ग विशेष की कमाई का धंधा मात्र बनकर रह गया था।

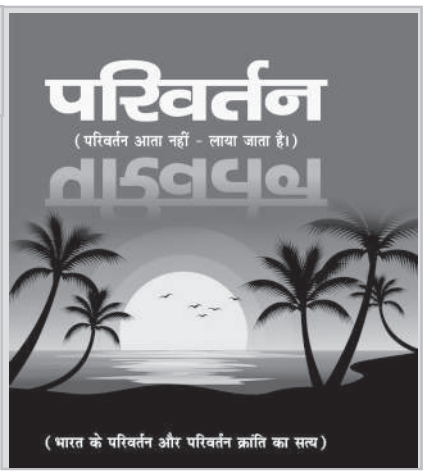

प्राचीन वैभव को दर्शाते सभी स्थानों और शहरों के नाम परिवर्तन और हमारे शानदार इतिहास को छुपाने का षड़यन्त्र पूरा हो रहा था। प्राचीन नाम प्रयागराज को इलाहबाद, कर्णावती को अहमदाबाद, भाग्य नगर को हैदराबाद, धाराशिव को उस्मानाबाद, कोल का नाम अलिगढ़, कुशपुरा का नाम सुल्तानपुर, चन्द्र नगर का नाम फिरोजाबाद कर दिया गया, ताकि हमें यह लगे कि भारत के सभी नगर, शहर मुगल सत्ताओं द्वारा ही बनाए गए हैं। जिन महापुरुषों के प्रति हमारी अगाध आस्था थी उनको समाप्त करने के लिए काव्य ग्रंथों की रचना करवाई गई ताकि हमारी पीढ़ी स्वयं ही उनसे घृणा करने लगें। ऐसे–ऐसे आरोप लगा दिए गए जिनको सुनाना–बताना दोनों ही असम्भव हैं।

– **क्रमश:**

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
मो. 09540040339, 011–23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों-ज्ञान ज्योति महोत्सव के अन्तर्गत .....

19 जुलाई को आचार्य किशोर जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें जम्मू कश्मीर के माननीय राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जी ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। इस अवसर पर जम्मू कश्मीर के आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य परिवार सहित उपस्थित रहे, सबने यज्ञ में आहुति दी और यह यज्ञ दोनों दिन लगातार चलता रहा। श्री दिनेश पथिक जी एवं आचार्य कुलदीप जी द्वारा राष्ट्रभक्ति और महर्षि दयानंद सरस्वती जी तथा आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं को सामने रखकर सुंदर भजनों से सारा वातावरण भक्तिमय हो गया। आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास विषय पर सम्मेलन में सभा प्रधान श्री नरेंद्र त्रेहन जी ने स्वागत भाषण दिया और इस अवसर पर श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, आचार्य नंदिता शास्त्री, विनय आर्य ने विशेष उद्बोधन दिए, दिल्ली सभा के महामंत्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी जम्मू कश्मीर नहीं आए लेकिन स्वामी जी के विचारों का प्रभाव जम्मू कश्मीर के ऊपर बहुत गहरा पड़ा। अपने आर्य समाज के इतिहास को स्मरण करते हुए कहा कि भारत के प्रथम जस्टिस श्री मैहर चंद महाजन जी जो राजा हरि सिंह के राज्य में मंत्री थे, वे अगर मेहरचंद महाजन बने तो उसके पीछे महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों का ही योगदान था। क्योंकि बचपन में जन्म पत्री के आधार पर उन्हें गडरिये को दे दिया गया था, आर्य समाज के प्रचारको ने प्रेरणा देकर उन्हें गुरुकुल में शिक्षा के लिए भिजवाया और परिणाम स्वरूप राजा हरि सिंह के प्रधान मंत्री बने, डीएवी कालेज मैनेजिंग कमेटी के अधिकारी बने और भारत के प्रथम चीफ जस्टिस बने। यह आर्य समाज और महर्षि दयानंद की ही देन थी, आपने दूसरा उदाहरण देते हुए रामचंद्र महाजन जी के बलिदान का स्मरण किया, जिन्होंने जम्मू कश्मीर में फैली हुई ऊंच नीच, जात-पात की खाई को पाटने के लिए महर्षि की प्रेरणा से अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था, रामचंद्र महाजन ने दलितों के साथ बैठकर भोजन किया, उनके लिए पानी के कुंआ खुदवाया, बच्चों की पढ़ाई के लिए विद्यालय खोला, और इसी परोपकारी अभियान के कारण उन्होंने अपना बलिदान दिया, आपने ऋषि कश्यप कि इस पवित्र भूमि को याद करते हुए आर्य समाज की ओर से आह्वान किया कि आज बढ़ता हुआ नशा और परिवारों की घटती संख्या देश के सामने एक बहुत बड़ी समस्या है, इसके लिए यहां पर दो दिनों तक चिंतन मनन और मंथन किया जाएगा। आपने आगामी दिल्ली में होने वाले 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उपस्थित जन समूह को निमंत्रण दिया।

इस अवसर पर जम्मू कश्मीर के माननीय उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जी ने जम्मू में आयोजित प्रांतीय आर्य महासम्मेलन में अपने उद्बोधन में कहा कि आतंक और नशामुक्त जम्मू-कश्मीर बनाना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। वैदिक ज्ञान को स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल करने और नई पीढ़ी को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। आर्य महासम्मेलन नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और महर्षि दयानंद के आदर्शों से प्रेरित करने का एक

- जारी पृष्ठ 5 एवं 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश द्वारा

हि.प्र.के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में निरन्तर जारी है पीड़ितों की सहायता एवं राहत कार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य वीर दल दिल्ली एवं हिमाचल सभा के कर्मठ अधिकारी, कार्यकर्ता हिमाचल प्रदेश में बाढ़ से टूटी-फूटी सड़कों और खतरों को पार करते हुए जरौल, हरसोहा, बाड़ा, परवाड़ा, लंबाछाछ, झीझली, जरोल गांव में राहत सेवा एवं बचाव कार्यों मे समर्पित होकर प्रभावित परिवारों को वस्त्र, कंबल, तिरपाल, बर्तन आदि राहत सामग्री निरन्तर वितरित कर रहे हैं। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने जिलाधीश कार्यालय पहुंचकर सेवा कार्यों की जानकारी दी जिस पर कलेक्टर महोदया ने आर्यसमाज के सेवा कार्यों की हृदय से प्रशंसा की।

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के 150 वें वर्ष के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जब-जब देश, धर्म और संस्कृति के सामने कोई भी चुनौती खड़ी होती है, तब-तब आर्य समाज तन-मन और धन से हर समस्या का समाधान अपनी चिर-परिचित शैली में देता है। देश में जब भी प्राकृतिक आपदाएं मुसीबत बनकर आई, चाहे उनमें भूकंप की त्रासदी हो या बाढ़ का विकराल रूप, आर्य समाज ने आगे बढ़कर आपदा बचाव राहत के कार्यों में अपना शत प्रतिशत योगदान दिया।

पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश में आसमानी बारिश और बादल फटने से बाढ़ ने भयंकर विकराल रूप धारण किया। तब आर्य समाज के युवा संगठन आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीरों ने तथा हिमाचल प्रदेश के कर्मठ और जुझारू कार्यकर्ताओं ने आगे बढ़कर बाढ़ आपदा बचाव राहत कार्य में गांव-गांव जाकर के राहत सामग्री वितरण की। जिसमें स्त्री-पुरुषों को वस्त्र, कंबल, गर्म वस्त्र, तिरपाल और अन्य सामग्री भेंट की। यह कार्य अभी लगातार जारी है क्योंकि बाढ़ के समाप्त होने के बाद भी वह बहुत सारे दु:खद चिन्ह छोड़कर जाती है। इसलिए आर्य समाज के आर्यवीर पूरी तरह से मुस्तैद और समर्पित होकर सेवा कार्यों में संलग्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू में दो दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन ....

ज्ञान संस्कृति एवं धर्म प्रचार समारोह - प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर यज्ञाहुति प्रदान करते एवं स्मृति चिह्न प्राप्त करते उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जी तथा राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते सार्वदेशिक सभा, जम्मू-कश्मीर सभा एवं दिल्ली सभा के अधिकारीगण

150 वर्षों के ऐतिहासिक तथ्यों पर अधारित विभिन्न नाटिकाओं का मंचन एवं विविध सांस्कृति कार्यक्रमों का प्रस्तुति के विहंगम दृश्य

जम्मू-कश्मीर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आर्यजगत के संन्यासी महानुभावों का मिला अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद

सम्मेलन की सफलता एवं दिल्ली में होने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्मलित होने के लिए उत्साहित कार्यकर्ताओं ने किया जयघोष एवं बाबा जित्तो सभागार शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू में उपस्थित आर्यजनों का विशाल समूह

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वामन्तव्य-व्यामन्तव्य प्रकाश

गतांक से आगे-

एक एव सुहद्धर्मो निधनेप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।3।
-मनुस्मृति

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था
विततो देवयानः ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र
तत्सत्यस्य परमं निधनम् ।। 4 ।।
नहि सत्यात्परो धर्मो, नानृतात्पातकं परम् ।
नहि सत्यात्परं ज्ञानं, तस्मात् सत्यं
समाचरेत् ।। 5 ।।
-उपनिषद्

नीति-निपुण लोग निन्दा करें, या स्तुति, लक्ष्मी आए, जहां चाहे जाए, मृत्यु आज हो या युग-युगान्तर में, धर्मपरायण धीर जन न्याय पथ से कभी भी विचलित नहीं होते। 1 ।

मनुष्य को उचित है कि काम, भय, लोभ आदि किसी भी कारण से एवं प्राणों के संकट में पड़ जाने पर भी धर्म का परित्याग न करे; क्योंकि सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख तो होता ही रहता है। सुख और दुःख अनित्य हैं, परन्तु धर्म नित्य है। इसी प्रकार जीव भी नित्य है, परन्तु जीवों के जन्म और मरण का कारण अनित्य है। 2 ।

धर्म ही एकमात्र ऐसा श्रेष्ठ मित्र है, जो कि मृत्यु के पश्चात् भी जीव के साथ ही जाता है। और सब मित्र बन्धु-बान्धव तथा पदार्थ तो शरीर के नाश के साथ-ही-साथ नष्ट हो जाते हैं। 3 ।

सत्य की ही सदैव विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य से ही ज्ञान का मार्ग विस्तृत होता है। आप्त कामनाओं वाले ऋषि लोग निश्चय करके, जहां आक्रमण करते हैं, अर्थात् जिनको प्राप्त करने का यत्न निरन्तर किया करते हैं, वह सत्य का ही सर्वोत्कृष्ट स्थान है। 4।

सत्य से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है और न ही असत्य से बड़ा कोई पातक है। सत्य से बढ़कर कोई दूसरा ज्ञान भी नहीं है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि वह सब कालों और सब अवस्थाओं में एकमात्र सत्य का ही व्यवहार करें। 5।

इन्हीं महाशयों के श्लोकों के अभिप्राय के अनुकूल सबको निश्चय रखना योग्य है। अब मैं जिन-जिन पदार्थों को, जैसा जैसा मानता हूं उन सबका वर्णन संक्षेप से यहां करता हूं कि जिनका विशेष व्याख्यान इन ग्रन्थ में अपने-अपने प्रकरण में कर दिया है। इनमें से -

1. प्रथम **'ईश्वर'** कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्द आदि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्ति-मान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्यन्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूं।

2. **चारों 'वेदों'** (विद्या धर्मयुक्त ईश्वरप्रणीत संहिता मन्त्र-भाग) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं। वे स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारों वेद हैं, और चारों वेदों के ब्राह्मण, छः अंग, छः उपांग, चार उपवेद और 1127 (ग्यारह सौ सत्ताईस) वेदों की शाखा, जो कि वेदों के व्याख्यानुरूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाए ग्रन्थ हैं, उनको परतः प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्ध वचन हैं, उनका अप्रमाण करता हूं।

3. जो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको **'धर्म'**, और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्या-भाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है, उसको **'अधर्म'** मानता हूं।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा
लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर
पुनः प्रकाशित जीवनी
'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Greatness Of Swami Dayanand

There is no doubt that Swami Dayanand's high personality and character can be praised everywhere. He was absolutely pious and a gentleman who behaved according to his principles. He was a great lover of truth. **-Reverend C.F. Andduj**

Credit goes only to Swami Dayanand that in half a century, Hindu people have started following a very pure theism, leaving orthodoxy and worship-ping mythological gods and goddesses.

-Principal S.K. Rurd

I know very well the service that Maharishi Dayanand has given to India and the world. He was one of the best great men of India. The biggest service that Swamiji has done to the motherland is that he has inculcated the idea of caste education in it.

Mr. G.S. Arundale

Rishi Dayanand contrib -uted so much in the revival of Hindu society that he will be considered as the foremost Hindu of the 19th century.**-Mr. Taraknath Das,**
M.A., P-HD. (Munikh)

Swami Dayanand is one of those religious great men of India, Who can be praised throughout any one's life.

He gave the message of freedom of mind, speech and action and preached equality of all human beings. He remained great in his life and death.

- Mrs. Sarladevi Choudharani

Maharishi Dayanand was one of those famous and exalted souls of Mother India, whose name will always shine like a shining star in the history of the world. He is one of those sons of Bharat Mata, about whose personality how so ever proud we may feel, it would appear to be less still. There have been many emperors and conquerors in the world like Napoleon and Alexander, but Swami was greater than all of them.

-Khadeeja Begum M.A.

If any person is fortunate enough to be responsible for warning India from the main attack of Christianity and Western civilization, Swami Dayanand ji can be first of all. The invaluable work done by Swami Dayanand ji for India in the 19th century has greatly benefited the Hindu society as well as Muslims and followers of other religions.

-Peer Muhammad Yunis

Swami Dayanand was the first person who raised the slogan 'Hindustan for Hindustanis'.... I have good wishes in my heart for the Arya Samaj and a feeling of true worship in my heart for that great man whom you Aryas revere.

-Mrs. Anne Besant

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति महोत्सव के आयोजनों के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व आरम्भ हो जाते हैं, कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 28 या 29 अक्तूबर को दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 28 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी।

महासम्मेलन में दिल्ली पधारने वाले समस्त आर्यजनों को दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से महासम्मेलन स्थल तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है। आप कहां से, कब, कितने बजे, किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते '**15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**' पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें। अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था की जा सके। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं 150वें .....

सशक्त माध्यम है। उपराज्यपाल जी ने कहा, वैदिक ज्ञान के पुन: प्रचार-प्रसार की जरूरत है। इसे स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह न केवल हमारी प्राचीन सभ्यता के मूल्यों और आदर्शों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाएगा, बल्कि विज्ञान, कला, मानव की और गणित के क्षेत्र में हमारी समृद्ध विरासत से भी परिचय कराएगा। स्वामी दयानंद के विचार आज भी दुनिया में स्थायी शांति और स्थिरता ला सकते हैं।

गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने अपने विशेष उद्‌बोधन में कहा कि गत दो वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में आर्य समाज से जुड़े कार्यक्रमों की श्रृंखला में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सहित अनेक विशिष्ट जनों की सहभागिता रही है। ये कार्यक्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे हैं, जो वैदिक पथ पर चलने वालों में नई ऊर्जा का संचार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ, तब देश की जनसंख्या लगभग 33 करोड़ थी। उस समय उन्होंने अकेले ही रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, आडंबर और पाखंड के विरुद्ध सशक्त आंदोलन छेड़ा। उस काल में वेदों पर मानो धूल जम चुकी थी, जिसे स्वामी दयानंद ने झाड़कर मानवता को पुन: वेदों से परिचित कराया। उनके इस कार्य के फलस्वरूप गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम जैसे तेजस्वी वैचारिक योद्धाओं की नई पीढ़ी भारतवर्ष में जन्मी। आज विश्व में यह सोच पनप रही है कि केवल हमारा ही मत सही है, बाकी सब असत्य हैं। यही संकीर्ण मानसिकता वैश्विक संघर्षों का मूल कारण बन गई है। जबकि वेद समस्त मानवता के कल्याण के लिए हैं, न कि किसी विशेष भूभाग के लोगों के लिए। और इन्ही वेदों से हमें परिचित कराने वाले एकमात्र महापुरुष थे स्वामी दयानंद।

इस अवसर पर आर्य समाज के इतिहास पर आधारित प्रेरक नाटिकाओं का मंचन किया गया जिसमें जस्टिस मेहरचन्द महाजन, रामचन्द्र महाजन और महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज आदि ऐतिहासिक नाटिका देखकर उपस्थित समूह भाव विभोर हो गया। 20 जुलाई को शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया जिसमें हर आयु वर्ग के आर्यजन उपस्थित रहे। सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं और अतिथियों का आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की ओर से अधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। बहुत प्रेम सौहार्द के वातावरण में आर्य महासम्मेलन संपन्न हुआ और सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र त्रेहन जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

- राजीव सेठी, मन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य .....

पीढ़ी को आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यता और परम्पराओं से अवगत कराने का यह सुनहरा अवसर है। अत: सभी आर्यजन अपने पुत्र, पुत्रियों को, सगे सम्बन्धियों को, इष्ट मित्रों को उपरोक्त तिथियों में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अवश्य आमन्त्रित करें, चाहे वे विदेश में रहते हों अथवा भारत में किसी भी स्थान पर, इस अवसर पर सबका उपस्थित होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। इसके लिए सभी आर्यजन स्वयं ही स्वयं को निमन्त्रण दें, और अपने बच्चों को तथा परिजनों को भी स्वयं ही आमंत्रण दें, यह सम्मेलन सबका सम्मेलन है, अत: इसे अपना निजी कार्यक्रम मानकर आगे बढ़ें।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की तिथियां 30 अक्टूबर बरसे 2 नवंबर 2000 25 तक दिल्ली के स्वर्ण जयंती पार्क सेक्टर 10 रोहिणी के विशाल प्रांगण में विश्व की सभी आर्य समाजों के अधिकारी, शिक्षण संस्थानों के अधिकारी, अध्यापक, अध्यापिकाएं हैं और लाखों की संख्या में छात्र-छात्राएं हैं। आर्य परिवार, प्रतिष्ठानों का यह विश्वव्यापी मेला लगेगा, आर्य समाज के इतिहास का यह सबसे बड़ा और विशाल सम्मेलन होगा, इस अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि हम महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, आर्य समाज की मान्यताओं, सिद्धांत और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए पूरी शक्ति के साथ अभियान चलाएं और कृण्वन्तो विश्मार्यम के उदघोष को सफल बनाएं।

-सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली - 2025 की तैयारियों हेतु

दिल्ली आर्य पुरोहित सभा की बैठक आयोजित

दिल्ली में आगामी 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों - ज्ञान ज्योति पर्व के समापन समारोह के रूप में होने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 में दिल्ली के पुरोहित/धर्माचार्यों को विशेष उत्तरदायित्व निभानी है। इस हेतु दिल्ली आर्य पुरोहित सभा की विशेष बैठक **28 जुलाई, 2025 को सायं 3 बजे आर्य समाज बिडला लाइन्स कमला नगर** में आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी की अध्यक्षता एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के मुख्य आतिथ्य में आमन्त्रित की गई है। सभी विद्वानों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर बैठक को सफल बनाएं, यह हम सबकी विशेष जिम्मेदारी है।

- मेधश्याम वेदालंकार, महामन्त्री **कुंवरपाल शास्त्री, मन्त्री**

वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक उपदेशक, प्रचारक तथा भजनोपदेशक आमन्त्रित हैं

वैदिक विचार धारा के विस्तार और प्रचार हेतु एक व्यवस्थित प्रचार-योजना बनाई जा रही है जिसके अन्तर्गत आर्यसमाज और वैदिक विचारधारा के प्रति समर्पित, व्यवहार कुशल और चरित्रवान व्यक्तियों के द्वारा पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करवाया जायेगा। इस हेतु निर्धारित चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत चयन किये गये उपदेशकों, प्रचारकों तथा भजनोपदेशकों को यह जानकारी प्रदान की जायेगी कि एक निर्धारित योजना के अन्तर्गत प्रचार-प्रसार का कार्य किन किन मुख्य विषयों को आधार बनाकर एक रूपता के साथ सभी स्थानों पर किया जाये। प्रचार के दौरान वितरित की जाने वाली प्रचार सामग्री तथा साहित्य की भी जानकारी दी जायेगी।

इस हेतु प्रारंभिक रूप में 10 प्रचारकों का चयन किया जायेगा जो भारत के हिन्दी भाषी राज्यों तथा गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में प्रचार करेंगे। चयनित महानुभावों को कम से कम तीन वर्ष संगठन के साथ कार्य करना होगा। सभी प्रचारकों को सम्मानजनक मानदेय और आवश्यक प्राथमिक सुविधाऐं उपलब्ध कराई जायेंगी।

स्वाध्याय-शील, कुशल-वक्ता, व्यवहार-कुशल तथा मिशनरी भावना वाले जिज्ञासु सादर आमन्त्रित हैं। गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त शास्त्री एवं आचार्य तथा प्रचार-प्रसार के कार्य में अनुभवी आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी। कृपया शीघ्र ही फोटो सहित अपनी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव आदि का पूर्ण विवरण निम्न पते पर भेजें अन्यथा मेल करें।

भवदीय

(सुरेशचन्द्र आर्य)
प्रधान-सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आवेदन भेजने का पता

श्री प्रकाशजी आर्य, आर्यसमाज मन्दिर, 2795, पं.राजगुरु शर्मा मार्ग (इन्दौर रोड),
महू -453441(म.प्र.), मो.9826655117, Email ID: prakasharyamhow@gmail.com

⑧ साप्ताहिक **आर्य सन्देश**
सोमवार 21 जुलाई, 2025 से रविवार 27 जुलाई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25-26/07/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 जुलाई, 2025

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली
ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु
दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha-Doner's
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

समय दानी आर्यजन कृपया ध्यान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 के आयोजन 30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 की आयोजन तथा आयोजन से पूर्व तथा पश्चात् की व्यवस्थाओं तथा उसके लिए गठित होने वाली विभिन्न समितियों में सहयोग करने के लिए सभी आर्यजनों एवं कार्यकर्ताओं से समय दान करने का निवेदन किया जाता है। अत: जो आर्यजन **कम से कम 7 दिन का समय** सम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोगी बनने के लिए दान करना चाहें, वे कृपया अपना नाम, मो.न. एंव विवरण तथा किन तिथियों में समय में कब से कब तक का समय दान कर सकते हैं **9311721172** पर नोट करा दें। हमारे कार्यकर्ता शीघ्र ही आपसे सम्पर्क स्थापित करेंगे।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
ऐतिहासिक रूप से भव्य, सफल एवं प्रेरणाप्रद बनाने हेतु
सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अत: आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव **15 अगस्त 2025** तक भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001, मो. 9311721172
Email:aryasabha@yahoo.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह